जयंती देवी
सखी मंडल ने घरेलू महिला को कुशल कारोबारी बना दिया

हाइलाइटर : महिलाओं में जितना साहस और आत्मविश्वास होता है, उसे तभी परखा जा सकता है, जब उन्हें कोई महती जिम्मेवारी दी जाये। गिरिडीह जिले के बेंगाबाद की रहनेवाली एक आम घरेलू महिला जयंती देवी के साथ ऐसा ही हुआ, जब सखी मंडल से जुड़ने के बाद उनकी कारोबारी प्रतिभा खुल कर सामने आयी। साउंड सिस्टम को किराये पर देने के कारोबार में अब महारत हासिल कर चुकी जयंती देवी अपनी कमाई से शीघ्र ही एक पिकअप वैन खरीदने वाली हैं। उनकी सफलता आज मिसाल बन गयी है।

सखी मंडल में शामिल होने के बाद गिरिडीह जिले के बेंगाबाद ब्लॉक की रहनेवाली जयंती देवी सरीखी महिलाओं के जीवन में बहुत बड़ा बदलाव आया है। हालांकि, उनकी हालत हमेशा से ऐसी नहीं थी, उन्होंने अपने जीवन में कई तरह की परेशानियों का सामना किया, लेकिन गरीबी के खिलाफ लड़ने के उनके जज्बे और सखी मंडल द्वारा उनको दिये गये सहारे की वजह से उनके जीवन में बदलाव आया है। वे जागरूक हुईं और सक्रिय महिलाओं के जरिये उनका उत्साहवर्धन हुआ। उन्होंने आवश्यकतानुसार चौदह छोटे ऋण भी समय–समय पर लिया और समय पर चुकाया भी। सखी मंडल में योगदान करने के बाद उनका आत्मविश्वास बढ़ा और उनको मालूम हुआ कि अपनी क्षमता का संवर्धन किस तरह से करना है।

अपनी जीविका के लिए उन्होंने एक किराना दुकान के साथ शुरुआत की और इसके लिए 15,000 रुपये का लोन लिया। इस दुकान की बदौलत अपनी पहली आय को वे अब भी याद करती हैं। कारोबार से उनमें नये किस्म का आत्मविश्वास हासिल हुआ। अपनी दुकान का विस्तार करने के लिए दूसरी बार उन्होंने 10,000 रुपये का लोन लिया। अब वे इसी दुकान से प्रति माह औसतन 10 से लेकर 12 हजार रुपये तक कमा लेती हैं।

इसके बाद से उन्होंने पीछे मुड़कर नहीं देखा और डीजे साउंड के साजो–सामान की खरीदारी के लिए एक लाख रुपये का एक और लोन लिया। वे इस बात का जिक्र करती हैं कि अब वे बिना किसी खास प्रयास और समय की बर्बादी के साउंड के साजो–सामान को किराये पर देकर ही सालाना 70–80 हजार रुपये तक कमा लेती हैं। अब उनको शादी पार्टी और दूसरे समारोहों से ऑर्डर भी हासिल हो रहे हैं। आजीविका के ऐसे क्रियाकलापों से वे अपने परिवार को आर्थिक सहयोग मुहैया कर पाने में सफल हो सकी हैं। अब उनका परिवार भावनात्मक और आर्थिक तौर पर मजबूत हो गया है। प्रसाधन से जुड़ी सामग्रियों की मांग का अध्ययन करने के बाद जयंती जी ने इससे संबंधित एक छोटा स्टोर भी खोला है, जिससे उनकी मासिक आय में 2–3 हजार रुपये की बढ़ोत्तरी हुई है। अब चूंकि उन्होंने अपना उद्यम शुरू किया और काफी अच्छा काम कर रही हैं, इसीलिए उन्होंने आजीविका के दूसरे कार्यकलापों के माध्यम से सखी मंडल की दूसरी जरूरतमंद महिलाओं को रोजगार दिया है।

वे न केवल आजीविका के जरिये कमा रही हैं, बल्कि सखी मंडल की दूसरी महिलाओं को रोजगार के मौके के जरिये मदद भी कर रही हैं। ईंटों की अधिक मांग और इसके निर्माण के उपयुक्त अवसर को देखते हुए उन्होंने एक फैक्ट्री लगाने की सोची और दैनिक वेतन पर सखी मंडल की महिलाओं को उसमें रखा। अपनी योजना को अमली जामा पहनाने के लिए उन्होंने एसएचजी से शुरुआत में बीस हजार रुपये लोन लिया। अब उन्होंने तीन महिलाओं को उनके पतियों के साथ दैनिक वेतन पर ईंट के निर्माण के लिए रखा है। उनको अलग–अलग सरकारी योजनाओं, जैसे–इंदिरा आवास, बकरी शेड, स्वच्छ भारत मिशन के तहत शौचालय निर्माण के लिए तीन लाख ईंटों का ऑर्डर हासिल हुआ, लेकिन बरसात और दूसरे प्राकृतिक अवरोधों की वजह से वे दो लाख बीस हजार ईंटों का निर्माण और उसकी आपूर्ति ही कर पायीं। इस काम में उनको एक लाख रुपये से ज्यादा का मुनाफा हुआ।

वे कहती हैं कि सखी मंडल की मदद से उनकी आजीविका के साथ पहचान भी बढ़ी है। सखी मंडल से जुड़ने के पहले वे अपना समय घरेलू काम कर बिताती थीं, लेकिन सखी मंडल ने उनको बाहर कदम रखने और अपने आसपास की दुनिया की खोज करने का मौका दिया। अब वह बेहतर तरीके से जीवन–यापन करने के लिए अपने परिवार की मदद करने में समर्थ हैं। उनके बच्चे अच्छी शिक्षा और बेहतर भविष्य के लिए अंग्रेजी माध्यम स्कूलों में जा रहे हैं। उन्होंने अभी अपने पति के लिए बाइक खरीदी है और अपना घर बनाया है। भविष्य के लिए उनकी योजना डीजे साउंड के साजो–सामान को किराये पर देने के लिए एक बोलेरो पिकअप वैन खरीदने की है, जिससे वे और बेहतर सेवा दे सकें।